सकारात्मक स्पंदन पुष्टि – दशम्

" जय श्री कृष्ण "

मित्रो एक बात कहें 🙏

हमारा जन्म हुआ तब हमें कोई रोग था?

नही

ओहहह! तो यह रोग क्या है?

ध्यान से समझना🙏

हममें रोग कब आये और कैसे आये?

१. वंशानुगत

२. हमारे DNA में है

३. ओहहह कितने लोगों में है - मुझमें आया

४. स्वभाव से है

५. अन्न की रुचि से है

६. मन की मानसिकता से है

७. तन की तितिक्षा से है

८. धन की अपेक्षा से है

९. धर्म की उपेक्षा से है

१०. संसार है

११. जीवन है

१२. उम्र है

१३. चारों ओर रोग है तो मुझमें क्यूं नही

१४. प्रकृति में है

१५. सृष्टि में है

१६. भगवान की इच्छा

१७. जो देता है वही देता है

१८. कर्मफल

१९. नसीब

२०. जन्म लिया तो जाना तो है - कौन नहीं गया?

२१. कोई न कोई रीत से मृत्यु पाना ही है

२२. हमें थोडी स्वर्ग पाना है

२३. बस जी रहे है

२४. बताओ कौन व्यक्ति या घर ऐसा है वहां मृत्यु न हुआ

२५. जन्म जीवन चक्र है

२६. काल की गति काल ही जाने

२७. काल को कौन जीत सका?

२८. कौन योग्य है?

२९. यह मृत्युलोक है

३०. शरीर नाशवंत है

३१. शरीर को त्यागना ही है

३२. तनमात्राएं ही हमारे साथ साथ है

३३. अनादि काल से जीते जीते आये है

३४. जगत है - आनाजाना ही है

३५. रोग कहां नहीं है?

३६. मेरी मरजी

३७. हम स्वतंत्र है

३८. छोडो बातें - जीने दो

३९. कोई तो नुकसान हो तब ही पता चलें

५०. हमें न सीखाओ - खुद समझो🙏

आदि आदि आदि आदि

बस हम सोचते रहे - समझते रहे - भुगते रहे और - मरते रहे

रोग तो माध्यम है🙏

ओहहह 🙏 कुछ नही कह सकते है

जो है वह है - जैसा है वह है - बस जीते चलो - जीते चलो - जीते चलो

चाहे कितने मार्ग हो🙏

चाहे कितनी विद्या हो🙏

चाहे कितनी सिद्धि हो🙏

चाहे कितनी शक्ति हो🙏

चाहे कितनी भक्ति हो🙏

हम तो यही है - ऐसे है - ऐसे ही है - ऐसे ही रहेंगे - ऐसे ही जीयेंगे

हर कोई अपना अपना जानता है - समझता है - करता है - भोगता है और जीता है🙏

बस हमें जीने दो - आप अपने पर जीओ - हम हम पर जीये🙏

ओहहह!🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कैसा कैसा रहस्य है

सांस भरे जीवन उगाये

सांस जगाये आनंद उत्साये

सांस रंगाये मधुरता महकाये

सांस केलवाये कला खिलाये

सांस मध्यमे जीवन गतिविधाये

सांस उंडाये अंग अंग मुस्काये

सांस नियंत्रणे आत्मा मिलाये

सांस मिलाये परमानंद उभराये

सांस से स्वर स्वर से गूंज गूंज से परम मिलन

हे प्रभु! सदा सांस मधुर रखना🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्रार्थना करिए नित नित श्री वल्लभ ने

चरण पखालिए शिश नमाविए दंडवत प्रणाम करिए जी

स्पर्श सेवा समर्पण सेवा पुष्टि नमन धरिए जी

प्रार्थना करिए नित नित श्री वल्लल ने

प्रार्थना करिए नित नित श्री यमुना ने

सूर्य सूता कृष्ण चतुर्थप्रिया रतिवर्धन प्रीत करिए जी

कृपाजलधिसंश्रिते मम मन: सुखं भवायीये जी

प्रार्थना करिए नित नित श्री यमुना ने

प्रार्थना करिए नित नित श्री गोवर्धन ने

भक्तभिलाषा व्रजाङ्गनावृंद सदा दंडवती वर्ये जी

रासोत्सवो द्वेल्लरसाब्धिसारी मम: प्रभु वंदिए जी

प्रार्थना करिए नित नित श्री गोवर्धन ने

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न कोई अपने मन से थका है

न कोई अपने नैनों से थका है

न कोई अपने विचारों से थका है

न कोई अपने ख्यालों से थका है

न कोई अपने आयुष्य से थका है

न कोई अपनी इच्छाओं से थका है

न कोई अपनी अपेक्षाओं से थका है

न कोई अपने सपनों से थका है

न कोई अपने संकल्पों से थका है

न कोई अपनी कल्पनाओं से थका है

न कोई अपनी सलाहों से थका है

न कोई अपने सूचनों से थका है

न कोई अपने स्मरणों से थका है

न कोई अपने अनुभवों से थका है

न कोई अपने धन से थका है

न कोई अपनी उम्मीदों से थका है

न कोई अपनी खूबसूरती से थका है

न कोई अपनी वैविध्यता से थका है

न कोई अपने रोग से थका है

न कोई अपने भोग से थका है

न कोई अपने योग से थका है

न कोई अपने संजोग से थका है

न कोई अपनी परिस्थितियों से थका है

न कोई अपने रास्तों से थके है

न कोई अपने व्यसनों से थके है

न कोई अपने रंगों से थके है

न कोई अपनी आशाओं से थके है

न कोई अपनी प्रतिक्षाओं से थके है

न कोई अपने विध्नों से थके है

न कोई अपनी जंग से थके है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

आखरी सांस तक नही थकते है

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझसे ही है हर उत्तम

मुझसे ही है हर उच्च

मुझसे ही है हर उत्स

मुझसे ही है हर उजाला

मुझसे ही है हर उम्मीद

मुझसे ही है हर उमंग

मुझसे ही है हर उल्म

मुझसे ही है हर उंडाई

मुझसे ही है हर उर्जा

मुझसे ही है हर उंचाई

मुझसे ही है हर उगाई

मुझसे ही है हर उपाय

मुझसे ही है हर उपयोग

मुझसे ही है हर उधम

मुझसे ही है हर उपलब्ध

मुझसे ही है हर उधोग

मुझसे ही है हर उपभोग

मुझसे ही है हर उक्ति

मुझसे ही है हर उच्चार

मुझसे ही है हर उडान

मुझसे ही है हर उत्तर

मुझसे ही है हर उदय

मुझसे ही है हर उभर

मुझसे ही है हर उमर

मुझसे ही है हर उल्लेख

मुझसे ही है हर उवाच

मुझसे ही है हर उष्ण

मुझसे ही है हर उतिष्ठ

मुझसे ही है हर उतिर्ण

हर कुछ मुझसे...........

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरी तो ठकुरानी है श्री यमुना माँ

मेरी तो महारानी है श्री यमुना माँ

मेरी तो रसरानी है श्री यमुना माँ

मेरी तो मधुरानी है श्री यमुना माँ

मेरी तो आह्लादायिनी है श्री यमुना माँ

मेरी तो भक्तिवर्धनी है श्री यमुना माँ

मेरी तो प्रभुरतिवर्धनी है श्री यमुना माँ

मेरी तो संगीनी है श्री यमुना माँ

मेरी तो जननी है श्री यमुना माँ

मेरी तो पदमिनी है श्री यमुना माँ

मेरी तो दर्शनी है श्री यमुना माँ

मेरी तो भवानी है श्री यमुना माँ

हे यमुना मैया 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

हे प्रभु! प्राकृतिक परिवर्तन - प्राकृतिक असर - प्राकृतिक रचनाएं हर एक को बदल देती है🌷🙏🌷

पर आप के सानिध्य में - आप के साथ जुडे हुए - आप के सत्य आचरण से स्वीकार्य हुए को न कोई परिवर्तन - असर और प्राकृतता बदल देती है🌷🙏🌷

कितना सरल - निश्चित धर्म मार्ग संस्थापा है आपने 🌷🙏🌷

आप अदभुत हो - अलौकिक हो - अनोखे हो - प्रमाणित हो - प्रमयी हो - प्रणयी हो 🌷🙏🌷

हम अपने नैन से - मन से - तन से - धन से - जीवन से आप से जुडे रहे - शरण रहे तो अवश्य तारणहार हर परिवर्तन - असर में हमें सुरक्षित रखेंगे🌷🙏🌷

तुम्हारी जय जय हो🙏

तुम्हारी जय जय हो🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वल्लल! हे विठ्ठल! हे गोकुलनाथ! हे हरिराय!

पुष्टिमार्ग की धजा फरफराते जन्मजीवन संस्कार सिंचा

हम अबुध जीव विशुद्ध रुप में परिवर्तन दिशा दर्शायी

सांस सांस से पुरुषार्थ सीखाया कोष कोष में तनु नवत्वता

कदम कदम पर अज्ञान संवारा श्री गोवर्धन परिक्रमा जगायी

रज रज छूए कण कण स्पर्शे पुष्टिगोत्र हृदय प्रकटाया

अनंत गुणों से गुण भूषिते समस्त दूरितक्षय नष्टाया

स्मरश्रमजलाणुभि: सकलगात्रजै: संङ्गम: आत्म एकात्मया

रग रग श्री यमुना वात्सल्य स्त्रोत पय: पान करवाया

हे वल्लल! हे विठ्ठल! हे गोकुलनाथ! हे हरिराय! नमन नमन🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कभी तुलसीजी को नमन किया है?

कभी तुलसीजी के सानिध्य में दीप प्रकटाया है?

कभी तुलसीजी का अभिषेक किया है?

कभी तुलसीजी का पूजन किया है?

कभी तुलसी पत्र अभिषेक किया है?

कभी तुलसी चौक में बैठे हो?

कभी तुलसी रस अमृत पीया है?

कभी तुलसी सुगंध सांस भरा है?

नही नही - कभी नही

ओहहह! तो जीवन कैसे जीये हो?

रोग - राग - कुष्ठ - तन मन धन जीवन पाया

कॉरोना काल जन्मजीवन जगाया

ऐसे मतवाले हम जो संस्कार जीवन बुझाया

न खुद को समझा न तुलसी समझा घर घर अंधेरा छाया

जागो जागो हे अज्ञान अंधे!

नैन मन तन धन जीवन तुलसी पधराये 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सत्संग - जो सत्य से जुडा हो

सत्य - जो सिद्धांत से जुडा हो

आत्मा - जो सत्याग्रही हो

अक्षर - जो सत्यार्थी हो

विचार - जो सत्यमन से उठता हो

क्रिया - जो सत्यतन से आचरण हो

वचन - जो सत्यसंयम से विवेकी हो

स्वीकार - जो सत्यनियमन हो

अपनाना - जो सत्यपारायण हो

मान्यता - श्रद्धा - लागणी - अर्धसत्य - असंमजस - अधुरप - स्व अहंकारी ज्ञान और भाव अचूक हमारी योग्यता - सत्यता को नष्ट करता है और हम धृतराष्ट्र हो कर बस जीते रहते है - एक दूसरे को पोषते रहते हो - दंभी दिलासा देते रहते हो।

ऐसा ज्ञान - ऐसा जीवन ऐसा धर्म ऐसा कर्म में डूबते रहना - स्वमन से इसे धन्यता समझे 🙏

ओहहह - कितनी अयोग्यता!

ऐसी गंगा यमुना बहाते बहाते काल - युग और स्व को कहां पहुंचाया?

हे ईश्वर! संमति - सदबुद्धि - संरक्षित प्रदान करते रहना 🙏

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे मित्रों! जिज्ञासा प्रश्न है - अवश्य उत्तर देना 🙏

हम मनुष्य धर्मिष्ठ - धर्म पारायण - धर्म आस्था - धर्म स्वीकार - धर्म सैद्धांतिक - धर्म पिपासु - धर्म आचरणीय - धर्म धारणीय - धर्म सन्यास - धर्म नियमन - धर्म चुस्त - धर्म योगी - धर्म यज्ञयी - धर्म शिस्त है 🙏 जिससे हम परम प्रेमी - भक्त - सेवक - दास और गुरुत्व पाते है🙏

तो भी हमारी चित्त वृत्ति सदा संसार व्यवहारिक में डूबी रहती है। ऐसा क्यूँ?

हम असंमजस और अधुरप कक्षा से जीवन जीते जीते मोक्ष गति मार्ग पर चलते है - यह जिज्ञासा से चिंतन करता रहता हूं की क्या कर सकते है?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नाम लिखने और नाम पुकारे और नाम स्मरणे और नाम रखने और नाम जपने और नाम धरने में

जो सामर्थ्यता है

जो विलक्षणता है

जो विराटता है

जो विद्वता है

जो विस्तृता है

जो विशेषता है

जो विभूषिता है

जो विनम्रता है

जो विरम्यता है

जो त्रिगुणातीतता है

जो व्याकरणता है

जो धर्मता है

जो धैर्यता है

जो वीरता है

जो शिष्टता है

जो अलौकिकता है

जो अखंडता है

जो संस्कारता है

जो सफलता है

जो सार्थकता है

यह हमें पानी है - थामनी है - सिद्धानी है - पुरुषार्थनी है - सत्यानी है🙏

यही ही हमारी मूलत्वता है

हमने चाहे अनेकों जन्म धरें - जीवन धरें - काया धरी पर जब ज्ञान जन्म - जीवन - काया धरी हमें अवश्य सार्थक करना ही है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" पढना " अर्थात ज्ञान पाना + भाव समझना सैद्धांतिक - वैज्ञानिक और प्राकृत अनुभवों से - शिक्षा से🙏

हमारे आचार्यों पढे

हमारे गुरुदेवों पढे

हमारे ऋषिमुनियों पढे

हमारे पूर्वजों पढे

हमारे मातापिता पढे

हम पढे

हमारे पुत्रपुत्री पढे

यही धारा है - यही संस्कृति है - यही संस्थापन है - यही संस्कार है🙏

" पढना " का अर्थ अनोखा है - अदभुत है - अविनाशी है - सत्यार्थी है - उर्जित है - प्रज्ञावान है - परमार्थी है - धर्मिष्ठ है - निरंकार है🙏

पढने से ही हर एक संस्कृत है

पढने से ही हर एक साक्षर है

पढने से ही हर एक आत्मा है

पढने से ही हर एक ब्रह्म है

प्राकृत जीने के लिए पढना - नही

जगत जीतने के लिए पढना - नही

दुनिया झुकाने के लिए पढना - नही

संसार सागर पार करने के लिए पढना - नही

भौतिक सुखों पाने के लिए पढना - नही

कहीं कहीं कहीं कहे

कहीं कहीं कहीं शास्त्रों लिखे

कहीं कहीं कहीं सिद्धि पाये

कहीं कहीं कहीं कक्षा उपलब्धे

" पढना " स्व के लिए

" पढना " स्व को समझने

" पढना " स्व को स्वीकारने

" पढना " स्व को अपनाने

" पढना " स्व को पाने

यही ही पढने का सर्वोच्च अर्थ है🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

धुम्मस भरा गगन

न सूरज अपनी छडी पुकारे

न पंखी अपनी उडान भरे

नजर मेरी ऐसी दौडे

दूर से बंसरी नाद सुनाये

मन में एक तस्वीर जागे

श्याम श्याम घनश्याम

मेरा प्रेम प्रेम प्रियतम

ऐसे पुकारे दौडी दौडी जाऊँ

ऐसे गाये तन मन बावरे

एक नजर एक ख्याल एक तस्वीर

श्याम श्याम घनश्याम

मेरा प्रेम प्रेम प्रियतम

सांस में श्याम नैन में श्याम

धडकन में श्याम उमंग में श्याम

पैर में श्याम तीव्रता में श्याम

श्याम श्याम घनश्याम

मेरा प्रेम प्रेम प्रियतम

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे प्रिये!

मेरे प्रभु ने

जब तुम्हें रचा होगा

कहीं बार ख्यालों में लाये होंगे

कहीं बार नैनों में तस्वीर संवारी होगी

ऐसी तो कैसी तु कमलनयनी है

जो सूरज उगते तेरे नैन कंवल पलक उठती है🌷

ऐसे तो कैसी तु अधरोंमृत गुलाब है

जो चंद्र उगते तेरी अधरों अमृत चांदनी बरसती है🌹

ऐसे तो कैसी है तेरा सोना वर्ण रंग है

जो कंचन काया रंग मेरे अंग अंग बिखराते है

ऐसे तो कैसी है तेरी दिल धडकन है

जो मधुर रस क्षण क्षण बरसाती है 💗

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे मेरे जगत मित्र 🌷

जैसे मैं जीता हूं ऐसे तु जीता है

जैसे मेरा जीवन है ऐसा तेरा जीवन है

मैं सांस भरता हूं तु सांस भरता है

मैं कर्म करता हूं तु कर्म करता है

मुझे एक दिन जगत छोडना है तुझे भी एक दिन छोडना है

हाँ! तु कोई स्थली पर रहे मैं कोई स्थली पर रहूं

हर स्थली की मर्यादा में रहते है

हर स्थली की व्यवस्था में रहते है

हर स्थली की व्यवहारता में रहते है

हर स्थली के शिस्त में रहते है

हर स्थली के शासन में रहते है

हर स्थली के धर्म में रहते है

हाँ! मैं अपने आप से तुझे पहचानु तु अपने आप से मुझे पहचाने

चाहे मैं दूर हूं चाहे तु दूर है

हमारा आकाश एक सूरज एक

हमारी धरती एक प्रकृति एक

हमारा जल एक वायु एक

हमारा अन्न भिन्न रंग भिन्न

हमारा धर्म भिन्न मन भिन्न

तो भी तु मुझसे चाहे मैं तुमसे चाहूं

चाह चाह में हम एक मनुष्य

हम ज्ञानी हम प्रेमी हम हर एक साथी

हमसे भगवान खुदा GOD

हे मित्र! प्रेम करुणा वात्सल्य से

साथ जीये साथ रहे

यही ही हमारा नाता ऐसे बने हम ज्ञाता

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वल्लभ! पुष्टि भूमी छूए एक सेवक

चंपारण्य से पावन हो एक सेवक

रज रज छू कर पुष्टाग्नि प्रकटा कर

दंडवत प्रणाम तनमनधन शरणम् सेवक

हे वल्लभ! पुष्टि भूमी छूए एक सेवक

हे यमुना! पुष्टि घाट खडा एक सेवक

ठकुरानी घाट से संबंध पाये सेवक

बूंद बूंद छू कर पुष्टि वचन स्वीकार

दूरितक्षय तनु नवत्व पाये सेवक

हे यमुना! पुष्टि घाट खडा एक सेवक

हे गिरिराज! पुष्टि परिक्रमा चले एक सेवक

मुखारविंद चरण स्पर्श दंडवती सेवक

कदम कदम पुष्टि सिद्धांत प्रण कर

स्व दासत्व शरणागत धरे सेवक

हे गिरिराज! पुष्टि परिक्रमा चले एक सेवक

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सायों को लिपट लिपट तेरी राह पर चलता हूं

खुद को भूल कर तेरे ख्यालों में डूबा रहता हूं

हे राधा! तु कहाँ है?

कदम कदम पर तेरा इंतज़ार

नजर नजर पर तेरी तस्वीर

तेरे नाम की धून पुकारे बंसी

तेरे प्रेम की विरहता खोये हस्ती

हे राधा! तु कहाँ है?

गोवर्धन निकुंज भटकली

यमुना तट घुमली

गोकुल गली छानली

वृंदावन पत्ते जांचली

हे राधा! तु कहाँ है?

आसमान के तारों को पूछा

धरती के वृक्षों को पूछा

सागर के बूंद को पूछा

वायु के लहर को पूछा

हे राधा! तु कहाँ है?

राधा🌺 हे राधा!🌺 हे राधा!🌺 हे राधा🌺

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीव -

मानव -

मनुष्य -

भक्त -

भगवदीय -

भागवत -

संत -

ऋषि -

मुनि -

ब्रह्मश्री -

भगवान -

जो मनुष्य जन्म धरे वह यह कक्षा पर पहुंच सकता है 🌷🙏🌷

हम जीते जीते - हमने कहीं चरित्र तरासे - हमारे पास और साथ यही कक्षित जीव का स्पर्श और अनुभव करते ही है

यही संसार - यही लोक - यही जगत - यही ब्रह्मांड - यही धाम में 🌷🙏🌷

जब हाथ पसारे जाते है तब यही संसार - जगत हम छोड कर जाते है - साथ जो पुरुषार्थ ले जाते है - जो अगले लोक धाम के लिए कक्षित रखते है

हम दुर्लभ मानुष्य अति भाग्यशाली 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

शास्त्रों के पन्ने और इतिहास के पन्ने घुमाये

जो जो चरित्र निहाले जो जो जीवन टटोले

कहीं ने ऐसी उम्र गुजारी कहीं ने कहीं निर्देशी

गुजारी हुई को जो अपनाया

सामान्यतः सामान्यतः स्व गुजारा

निर्देशी हुई को जो स्वीकारा

उत्तमत: उत्तमत: स्व पाया

यही कवायत हर जीवन की

पैसा से जीया वह पैसा से घवाया

धर्म से जीया वह धर्म से विधाया

यही है कर्म की पहचान

यही है स्व का सुसर्जन

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर दूर तक नैन फैलाये

जो जो नजर आया वह समाया

दूर दूर तक आवाज फैलाई

जो जो सुना उन्हें जगाया

दूर दूर तक कदम उठाये

जो जो साथ चले उन्हें निभाया

अब दूर दूर मैं चला

जो समाया को ले चला

जो जगाया को ले चला

जो निभाया को ले चला

यही कृष्ण है

यही कृष्ण था

यही कृष्ण होगा

अकेला बिलकुल अकेला सिर्फ़ अकेला

एक प्रियतम के साथ

एक सखी के साथ

एक भक्त के साथ

एक सखा के साथ

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे कुंज बिहारी वृंदावन विहारी

बांके बिहारी गोवर्धन धारी की जय हो

हे राधा प्यारी व्रज रस रानी

वृषभानु दुलारी प्रेम बरसानी की जय हो

हे नंद दुलारो यशोदा को कान्हो

देवकी न्यारो वसुदेव सहारो की जय हो

हे यमुना सांवरो श्यामा श्यामलीयो

कालिन्दी कालियो सूर्यसूता चतुर्थो

हे वल्लभ नायक महाप्रभु ध्यायक

वाक्पति सुबोधायक वैश्वानर पुष्टक

हे गोवर्धन गोपाल गिरिराज गौचारक

श्रीनाथजी गोत्रे गोप गोपि व्रजरक्षक

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे नाथ नारायण वासुदेव 🌷🙏🌷

हे नाथ नारायण वासुदेव 🌷🙏🌷

हर शब्द का अर्थ समझे तो यह मंत्र हो जाता है

हर शब्द का स्मरण करे तो यह प्रार्थना हो जाती है

हर शब्द का गूंजन करे तो यह पुकार हो जाती है

हर शब्द का यजन करे तो यह है आहुति हो जाती है

हर शब्द का आहवान करे तो अवतार हो जाता है

हर शब्द का ध्यान धरे तो तपश्चर्या हो जाती है

हर शब्द को स्वरबद्ध करे तो धून हो जाती है

हर शब्द को आत्मसात करे तो परमात्मा हो जाता है

हर शब्द को प्रेमोउर्जित करे तो प्रेमास्पद हो जाता है

हे अदभुत अलौकिक संस्कृति तुम्हें नमन है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भगवान "

यह आध्यात्म शब्द से हम कहीं अर्थो और मान्यता से वाकेफ है।

जन्म से लेकर यह क्षण तक हमनें अनगिनत बार सुना है - समझने की कोशिश की है - अनुभव करने की चेष्टा की है 🌷🙏🌷

हर क्षण हमारी जिज्ञासा वृत्ति रही है - इन्हें खोजने की - हर क्षण प्रतिक्षा करते है इन्हें पाने की - हर क्षण चेष्टा रही है इन्हें समझने की - हर क्षण प्रयत्नशील है इन्हें मिलने के🌷🙏🌷

युगो युगो से कहींने अधिकक्षम - अधि आध्यात्मिक ऐसा ऐसा कहा - खुद साक्षात्कार हुए - कहीं साक्षात्कार से जुडे - कहींने साक्षात्कार लुटाये🌷🙏🌷

बस - ऐसे ही शास्त्रोक्त और कर्मकांड से " भगवान " शब्द को जाना - भगवान के लिए कुछ करते गये, शायद कोई चमत्कार हो जाय🌷🙏🌷

बस यह चमत्कार वृत्ति हममें प्रस्थापित हो गई - हममें जाग गई - हममें घर कर गई - हममें मन कर गई - हममें बस गई🌷🙏🌷

बस यही से यह मान्यता का आरंभ...

" भगवान "

मातापिता - सामाजिक धार्मिक रीतिरिवाजों से हम भगवान को जानने की कोशिश करते रहे - करने लगे और हम संसार की असरों में घिसटते गये - कहीं अनुष्ठान किये - कहीं मनोरथ किये - कहीं उत्सव किये - कहीं प्रसंग में जुडे।

मन में कोई चरित्र - कोई संप्रदाय - कोई संस्कार - कोई मान्यता प्रस्थापित करते गए। जो स्वीकारा जो अपनाया संप्रदाय के निती नियमन का पालन करते करते श्रीगुरु शरणागत से स्व को धर्म के बंधन में बांधते गये 🌷🙏🌷

स्वीकारा और अपनाया धर्म में स्व को धर्मिष्ठ - धर्मप्रेमी - धर्मप्रधान प्रस्थापित करने बार बार डुबकी लगाने लगे, और उनके पद चिह्न अपने तन मन धन में प्रस्तुत करने लगे। यही ही सर्वश्रेष्ठ सैद्धांतिक धर्म जगत का है जिससे मैं जीता हूं।

पढे, स्नातक हुए यही धर्म संप्रदाय में खूपते गए " भगवान " के कहीं अर्थो में लिपटते गए - जो समझे वह गुणगान गाते गये।...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

विरह ताप से प्रेम रंग सजाया

न अक्षर न स्वर से प्रेम तोला

जो जो ख्यालों में प्रेम रंग उभरा

केवल तुझ संग होली खेला

कान्हा तु पिचकारी तो मैं रंग

प्रेमी हाथ धरे मैं रंगाऊँ तेरे संग

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी निगाहें टिकी टिकी

तेरी निगाहें रुकी रुकी

तेरी निगाहें ठहरी ठहरी

तेरी निगाहें मिलती मिलती

तेरी निगाहें कहती कहती

तेरी निगाहें पुकारती पुकारती

तेरे निगाहें गूँजती गूँजती

साथ हूं सब कुछ छोड कर

खडा हूं हर कुछ भूल कर

जुडा हूं सर्वस्व त्याग कर

यह केवल प्रेम है प्रेम ही है

जो केवल तुझे खबर मुझे खबर

जो केवल है तेरी नजर मेरी नजर

हे राधा! तु नही दूर मुझसे

हे राधा! तु नही क्षर मुझसे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" भगवान पुकारे और जीव दौडे "

आपने कहीं सुना है? आपने कहीं जाना है?

प्रार्थना हम करते है - याचना हम करते है

विनंती हम करते है -

हे प्रभु! कृपा करो - दया करो - रक्षा करो

मदद करो - वरदान दो

अर्थात - हम ही उन्हें बार बार पुकारते है

कभी सोचो

" भगवान हमें पुकारे "

सेवा करे - हम पुकारे

मनोरथ करे - हम पुकारे

उत्सव करे - हम पुकारे

सत्संग करे - हम पुकारे

भजन करे - हम पुकारे

कथा करे - हम पुकारे

यज्ञ करे - हम पुकारे

कीर्तन करे - हम पुकारे

यात्रा करे - हम पुकारे

अर्थात - हम ही पुकारे - केवल हम ही पुकारे

" भगवान हमें क्यूँ पुकारे? "

" भगवान हमें कब पुकारे? "

" भगवान हमें कैसै पुकारे? "

सोचे अवश्य सोचे

" भगवान हमें पुकारे? "

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

मुझे पता ही था सब ऐसा ही सोचेंगे

" भगवान कैसे पुकारे हमें? "

हम कहीं बार बोलते है

भगवान ने बुलाया तो हम यात्रा कर सके

भगवान ने बुलाया तो हम उनके धाम पहुंच सके

भगवान ने करवाया तब हम यह सब कर सके

अर्थात - हम सब जानते है - समझते है की " भगवान ही पुकारते है - बुलाते है - करवाते है " तो यह झंझाल क्यूं?

हम पामर जीव है

हम अबुध है

हम अज्ञानी है

हम मूढ है

नही नही

हम शायद पढे नही - हम पढे हुए है

हम कुछ न कुछ अंश तक स्नातक है अपने कार्यभार में - जीवन में 🌷🙏🌷

हम घडी घडी प्रभु स्मरण - सत्संग - पाठ - कथा और ज्ञान बांटते रहते है

तो भी हम पामर! अबुध! अज्ञानी! मूढ!

नही नही

सोचे - हमें भगवान क्यूं पुकारे?

हमें भगवान क्यूं बुलाये?

हमें भगवान क्यूं करवाये?

बस ऐसे ही ठोकते रहना और अपनी मान्यताओं को पोषते रहना!

नही नही 🌷🙏🌷

अवश्य - जानो - समझो - ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक बूंद नैन से

एक बूंद होंठ से

एक बूंद कपोल से

एक बूंद हस्त से

और

एक बूंद दिल से

टपक जाय

नैन से टपका

किसीके हस्त में गीरे तो

आधार बन जाय

होंठ से टपका

किसीके गाल पर गीरे तो

हूंफ बन जाय

कपोल से टपका

किसीके मन में बस जाय तो

किस्मत बन जाय

हस्त से टपका

किसीके चरण को छू जाय तो

संस्कार हो जाय

दिल से टपका

किसीके दिल में खील जाय

प्रेम अमृत हो जाय

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे प्रभु! काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया जो मैंने जन्म धरा तब न कुछ था - हाँ

माँ ने सिंचा

पिता ने थपथपाया

कुटुंब ने खेलाया

न मुझमें काम था

न मुझमें क्रोध था

न मुझमें लोभ था

न मुझमें मोह था

न मुझमें माया थी

किसने पिरोया - किसने पिरोयी?

गहराई से समझे 🙏

पूर्वानुजन्म कर्माणिनिधान - न सोचना

केवल यहीं से ही सोचना जबसे हमारे घर कोई बालक ने जन्म धरा और उनका तब तक बडा होना जबतक वह निर्णय ले सकने का काबिल हो गया 🌷🙏🌷

अवश्य सोचना - चिंतन करना - अध्ययन करना🙏

एकांत और एकाग्रता से

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जहां तक हमारा ज्ञान पहुंचे

जहां तक हमारा भाव पहुंचे

सदा मूल पंच तत्वों को माध्यम बना कर ही पहुंचते है 🌷🙏🌷

पंचतत्वों का संयोजन स्त्री और पुरुष के अनुसंधान से ही योगत्व कर सकते है।

शायद हम सोचे

* हमें दिर्घायु होना है

* हमें ऐश्वर्य पाना है

* हमें सुख पाना है

* हमें सलामती पानी है

* हमें शांति पानी है

* हमें प्रेम पाना है

* हमें आनंद पाना है

* हमें निरोगी होना है

तो हमें अवश्य स्त्री और पुरुष को आध्यात्म से निहालना होगा🌷🙏🌷

ब्रह्मांडों का जिस तरह से निर्माण हुआ है इनमें यह स्त्री तत्व और पुरुष तत्व को समझना अति आवश्यक है 🌷🙏🌷

स्त्री न अकेली सबकुछ पा सकती है

पुरुष न अकेला सबकुछ पा सकता है

हमारे कोई भी शास्त्र टटोल ले

यही सिद्धांत पायेंगे

स्त्री और पुरुष के संयोजन से ही सर्वत्र पा सकते है🌷🙏🌷

सन्यास लेने से अवश्य ज्ञान पा सकते है

पर

शांति ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वैज्यंति धारी

हे गिरिराज धारी

हे वृंदा हारी

हे भक्ति हारी

हे प्रेम समर्पि

हे मधुर उर्जि

हे रंग दानी

हे संग त्यागी

हे विरह रागी

हे अश्रु दुलारी

हे कष्ट बुहारी

हे शृंगार सुहायी

हे नैन तिरछाई

हे आत्म मिलाई

हे अंग स्पर्शाई

हे प्रीत बंधाई

हे कृपा बरसाई

हे धर्म दर्शाई

हे कर्म सिद्धाई

हे मेरे प्रभु!तुम काहो काहो नाही

हे मेरे प्रिये! तु सदा जीवन सच्चाई

" Vibrant Pushti ".

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गृहसेवा में दीपक नही प्रजवलित कर सकते है और आरती नही कर सकते है?

पर

हवेली में दीपक प्रजवलित करते है और आरती भी करते है।

ऐसा विरोधाभास क्यूँ?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अपने आप को अनेकों में पाया

अपने आप को अनेकों में ढूंढा

अपने आप को अनेकों में खोया

अपने आप को अनेकों में समाया

अपने आप को अनेकों में सिंचा

अपने आप को अनेकों में जगाया

अपने आप को अनेकों में बसाया

अपने आप को अनेकों में रचाया

अपने आप को अनेकों में मिटाया

अपने आप को अनेकों में मिलाया

अपने आप को अनेकों में रंगाया

अपने आप को अनेकों में डूबोया

अपने आप को अनेकों में भिगोया

अपने आप को अनेकों में हराया

अपने आप को अनेकों में निभाया

अपने आप को अनेकों में रिझाया

अपने आप को अनेकों में भूलाया

अपने आप को अनेकों में याचा

सच हे प्रभु! तुझे हर हर पाया🌷🙏🌷

मुझे हर कोई क्षमा करना अगर कोई मुझसे सूक्ष्मसा आपके लिए अपराध हो -
मैंने हर हर में श्री प्रभु पाया 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बार बार सुनते आये है

आज्ञा - आज्ञा " गुरु आज्ञा "

कुछ करना है - गुरु आज्ञा

कुछ संभलना है - गुरु आज्ञा

कुछ समझना है - गुरु आज्ञा

कुछ स्वीकारना है - गुरु आज्ञा

कुछ संकल्प करना है - गुरु आज्ञा

कुछ निपटाना है - गुरु आज्ञा

कुछ संवारना है - गुरु आज्ञा

कुछ सुधारना है - गुरु आज्ञा

कुछ पाना है - गुरु आज्ञा

कुछ संवेदना है - गुरु आज्ञा

कुछ जोडना है - गुरु आज्ञा

कुछ वेदना है - गुरु आज्ञा

कुछ टटोलना है - गुरु आज्ञा

कुछ सिद्‌ध करना है - गुरु आज्ञा

कुछ जताना है - गुरु आज्ञा

कुछ कहना है - गुरु आज्ञा

कुछ बढना है - गुरु आज्ञा

कुछ बांधना है - गुरु आज्ञा

कुछ छोडना है - गुरु आज्ञा

गुरु आज्ञा के बिना कुछ नहीं 🌷🙏🌷

अवश्य 🌷🙏🌷

कितना विश्वास - कितनी श्रद्धा - कितना दासत्व - कितना समर्पण - कितने आज्ञाकिंत - कितने विवेकी🌷🙏🌷

कभी सोचा है - यह आज्ञा क्या है?

कभी सोचा है - यह आज...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हरिदास त्योहारी राधा हृदय दुलारी

बांके बिहारी तोरी लाल लाडली प्यारी

निकुंज गोरी वल्लभ न्यारी गोप किशोरी

व्रज विहारी भक्त प्रेमहारी श्यामा जुहारी

यमुना मुरारी कुब्जा सिधारी गोवर्धन गिरधारी

मुरली धारी गोपाल गौचारी मोहन वारी

राधा तोरी राधा मोरी राधा हमारी

मेरी मेरी राधा तेरी तेरी राधा हमारी राधा

राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा राधा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक नजर से है न्यारी राधा रानी हमारी

एक मन से है मुरारी राधा रानी हमारी

एक तन से है तोहारी राधा रानी हमारी

एक प्राण से है प्यारी राधा रानी हमारी

एक आत्म से है आराध्यी राधा रानी हमारी

एक धडकन से है धूरी राधा रानी हमारी

एक सांस से है समाई राधा रानी हमारी

एक रंग से है रंगाई राधा रानी हमारी

एक आँचल से है ओढाई राधा रानी हमारी

एक शृंगार से है सजाई राधा रानी हमारी

एक प्रीत से है पूरवाई राधा रानी हमारी

एक विरह से है विंधाई राधा रानी हमारी

एक प्रेम से है पीलाई राधा रानी हमारी

एक श्याम से है श्यामाई राधा रानी हमारी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्यार! कितना मधुर 🌷

अलौकिक - अदभुत - अखंड

न्यारा - दुलारा - विरहा - एकात्मता

सच! केवल केवल केवल पवित्र

पता नही - हम यह पवित्रता क्यूं नही पा सकते है?

जन्म जन्म जीवन जीवन फिर भी नही पा सकते है 🌷🙏🌷

कितने संकल्प करें

कितने निश्चय करें

कितने प्रण करें

कितने वचन करें

क्यूं?

हम संसारी

हम इन्सान

हम मानव

हम जीव

हम जगती

हम अंश

नही नही 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्री यमुना मेरे साथ बहे

श्री गोवर्धन मेरे साथ चले

श्री अष्टसखा मेरे साथ गाये

श्री विठ्ठल मेरे साथ सेव्ये

श्री वल्लभ मेरे साथ बैठे

श्री पुष्टिमार्ग मेरे साथ साक्षरे

श्री लीला सखा मेरे साथ खेले

श्री लीला सखी मेरे साथ रमे

श्री भक्तवत्सल मेरे साथ समर्पे

श्री स्वामीनीजी मेरे साथ सेवे

श्री गोविंद मेरे साथ जागे

ओहहह! यमुना 🌷🙏🌷

ओहहह! गोवर्धन🌷🙏🌷

ओहहह! विठ्ठल 🌷🙏🌷

ओहहह! वल्लभ🌷🙏🌷

ओहहह! स्वामीनीजी🌷🙏🌷

ओहहह! गोविंद🌷🙏🌷

हे प्रभु! मैं तुम्हारी शरण 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

श्याम तेरी एक नजर मेरी नजर से मिलाना है

चाहे तुम तिरछी नजर से मेरी ओर निहालो

चाहे तुम मूंदी नजर से मेरी ओर निहालो

मुझे मेरी नजर तुम्हारी नजर से मिलाना है

श्याम तेरी एक नजर मेरी नजर से मिलाना है

चाहे तुम सीधी नजर से मेरी ओर निहालो

चाहे तुम झुकी नजर से मेरी ओर निहालो

मुझे मेरी नजर तुम्हारी नजर से एक करना है

श्याम तेरी एक नजर मेरी नजर से मिलाना है

चाहे तुम नैन बंध से मेरी ओर निहालो

चाहे तुम आंतर नैन से मेरी ओर निहालो

मुझे मेरे नैन तुम्हारे नैन से एक करना है

श्याम तेरी एक नजर मेरी नजर से मिलाना है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आपने कहीं श्री यमुना को देखी?

आपने कहीं श्री गोवर्धन को देखा?

आपने कहीं श्री वल्लभ को देखा?

आपने कहीं श्री विठ्ठल को देखा?

आपने कहीं श्री श्री नाथ को देखा?

हाँ! अवश्य देखा 🌷🙏🌷

वाह! आपको नमन🙏

वाह! आपको प्रणाम🙏

वाह! आपको वंदन🙏

मैंने श्री यमुना को देखा हर हर नैनों में👁

मैंने श्री गोवर्धन को देखा हर हर तन में🚶

मैंने श्री वल्लभ को देखा हर हर जीवन में🌞

मैंने श्री विठ्ठल को देखा हर हर मधुरता में 🌷

मैंने श्री श्री नाथ को देख हर हर आत्म में 🔥

यही निहालता रहूं - यही रस पीता रहूं - यही आनंद लुटाता रहूं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी सांसों में बसे

तेरे नैनों में बसे

तेरी धडकनों में बसे

तेरी रुह में बसे

तेरे आँचल में बसे

तेरे प्रेम में बसे

तुम ही कहो

तेरी हर चाह में बसा

तेरी हर राह में बसा

तेरी हर आह में बसा

तेरी हर बाह में बसा

अब ठहर जा यह नैनमें

अब ठहर जा यह अधर पे

अब ठहर जा यह धडकन में

अब ठहर जा यह सांसों में

अब ठहर जा यह विरह में

अब ठहर जा यह प्रेम में

राधा!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" हिन्दु " हम हिन्दु " हम हर हिन्दु " हमारा हिन्दुस्थान 🌷🙏🌷

आदि जगद्गुरु श्री शंकराचार्यजी का अखंड, अलौकिक, अदभुत पुरुषार्थ हमारी संस्कृति को उत्स , उद्दिप्त, उदभव, उजागर, उत्कृष्ट और उत्कर्ष करके सारे ब्रह्मांडों में हिन्दुत्व के संस्कार - धर्म प्रस्थापित किया है🌷🙏🌷

यही सांस्कृतिक धरोहर की जन्मभूमि " काशी " का नूतन परमश्रेष्ठ आर्विभाव हमारे प्रथम हिन्दुत्व सेवक माननीय श्री नरेन्द्रभाई मोदी के पवित्र और विश्वनीय संकल्प से नूतन निर्माण करके ब्रह्मांडों में " नूतन हिन्दु संस्कार काशी " हर तत्वों के लिए संस्थापित करेंगे🌷🙏🌷

हमारे लिए हिन्दु गौरव दिन है 🌷🙏🌷

हर एक को धन्यवाद 🌷🙏🌷👍

" जय जय हिन्दु साक्षरता "🌷🙏🌷

" जय जय हिन्दु आत्मीयता " 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मन - मानव - मनुष्य

हम में क्या है?

हम मन से है

हम तन से है

हम धन से है

हम जीवन से है

ओहहह! तो हम में क्या है?

हम में सर्वथा सर्वज्ञ सर्वश्रेष्ठ सर्वोत्तम सर्वोच्च है - विराटता🙏

हम में ब्रह्म है

हम में ब्रह्मांड है

हम में परब्रह्म है

जन्म से ही इश्वरीय बल - भगवदीय बल है

हम ही ऐसे जीव है जो ब्रह्म की विराटता पा सकते है🙏

हम समझते है - हम पृथ्वी लोक पर है

हम समझते है - हमें परलोक सिधारना है

हम समझते है - हमें गोलोक धाम पहुंचना है

हम समझते है - हमें मधुलोक में जाना है

हम समझते है - हमें कहीं लोक में पहुंचना है

नही नही 🙏

हम मनुष्य - हमें निर्भयता पानी है

हम मनुष्य - हमें योग्यता पानी है

हम मनुष्य - हमें साक्षरता पानी है

धन दौलत - यश एश्वर्य - लाभ प्रतिष्ठा वान मनुष्य है🙏

सोचो! यही होना है तो - करना है

सोचो! यही विद्वता पानी है

तो अवश्य हम यही लोक से इत...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मित्रो एक बात कहें 🙏

हमारा जन्म हुआ तब हमें कोई रोग था?

नही

ओहहह! तो यह रोग क्या है?

ध्यान से समझना🙏

हममें रोग कब आये और कैसे आये?

१. वंशानुगत

२. हमारे DNA में है

३. ओहहह कितने लोगों में है - मुझमें आया

४. स्वभाव से है

५. अन्न की रुचि से है

६. मन की मानसिकता से है

७. तन की तितिक्षा से है

८. धन की अपेक्षा से है

९. धर्म की उपेक्षा से है

१०. संसार है

११. जीवन है

१२. उम्र है

१३. चारों ओर रोग है तो मुझमें क्यूं नही

१४. प्रकृति में है

१५. सृष्टि में है

१६. भगवान की इच्छा

१७. जो देता है वही देता है

१८. कर्मफल

१९. नसीब

२०. जन्म लिया तो जाना तो है - कौन नहीं गया?

२१. कोई न कोई रीत से मृत्यु पाना ही है

२२. हमें थोडी स्वर्ग पाना है

२३. बस जी रहे है

२४. बताओ कौन व्यक्ति या घर ऐसा है वहां मृत्यु न हुआ

२५. जन्म जीवन चक्र है

२६. काल की गति काल ही जाने

२७. काल को कौ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कैसा कैसा रहस्य है

सांस भरे जीवन उगाये

सांस जगाये आनंद उत्साये

सांस रंगाये मधुरता महकाये

सांस केलवाये कला खिलाये

सांस मध्यमे जीवन गतिविधाये

सांस उंडाये अंग अंग मुस्काये

सांस नियंत्रणे आत्मा मिलाये

सांस मिलाये परमानंद उभराये

सांस से स्वर स्वर से गूंज गूंज से परम मिलन

हे प्रभु! सदा सांस मधुर रखना🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्रार्थना करिए नित नित श्री वल्लभ ने

चरण पखालिए शिश नमाविए दंडवत प्रणाम करिए जी

स्पर्श सेवा समर्पण सेवा पुष्टि नमन धरिए जी

प्रार्थना करिए नित नित श्री वल्लल ने

प्रार्थना करिए नित नित श्री यमुना ने

सूर्य सूता कृष्ण चतुर्थप्रिया रतिवर्धन प्रीत करिए जी

कृपाजलधिसंश्रिते मम मन: सुखं भवायीये जी

प्रार्थना करिए नित नित श्री यमुना ने

प्रार्थना करिए नित नित श्री गोवर्धन ने

भक्तभिलाषा व्रजाङ्गनावृंद सदा दंडवती वर्ये जी

रासोत्सवो द्वेल्लरसाब्धिसारी मम: प्रभु वंदिए जी

प्रार्थना करिए नित नित श्री गोवर्धन ने

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न कोई अपने मन से थका है

न कोई अपने नैनों से थका है

न कोई अपने विचारों से थका है

न कोई अपने ख्यालों से थका है

न कोई अपने आयुष्य से थका है

न कोई अपनी इच्छाओं से थका है

न कोई अपनी अपेक्षाओं से थका है

न कोई अपने सपनों से थका है

न कोई अपने संकल्पों से थका है

न कोई अपनी कल्पनाओं से थका है

न कोई अपनी सलाहों से थका है

न कोई अपने सूचनों से थका है

न कोई अपने स्मरणों से थका है

न कोई अपने अनुभवों से थका है

न कोई अपने धन से थका है

न कोई अपनी उम्मीदों से थका है

न कोई अपनी खूबसूरती से थका है

न कोई अपनी वैविध्यता से थका है

न कोई अपने रोग से थका है

न कोई अपने भोग से थका है

न कोई अपने योग से थका है

न कोई अपने संजोग से थका है

न कोई अपनी परिस्थितियों से थका है

न कोई अपने रास्तों से थके है

न कोई अपने व्यसनों से थके है

न कोई अपने रंगों से थके है

न कोई अपनी आशाओं से थके है

न कोई अ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मुझसे ही है हर उत्तम

मुझसे ही है हर उच्च

मुझसे ही है हर उत्स

मुझसे ही है हर उजाला

मुझसे ही है हर उम्मीद

मुझसे ही है हर उमंग

मुझसे ही है हर उल्म

मुझसे ही है हर उंडाई

मुझसे ही है हर उर्जा

मुझसे ही है हर उंचाई

मुझसे ही है हर उगाई

मुझसे ही है हर उपाय

मुझसे ही है हर उपयोग

मुझसे ही है हर उधम

मुझसे ही है हर उपलब्ध

मुझसे ही है हर उधोग

मुझसे ही है हर उपभोग

मुझसे ही है हर उक्ति

मुझसे ही है हर उच्चार

मुझसे ही है हर उडान

मुझसे ही है हर उत्तर

मुझसे ही है हर उदय

मुझसे ही है हर उभर

मुझसे ही है हर उमर

मुझसे ही है हर उल्लेख

मुझसे ही है हर उवाच

मुझसे ही है हर उष्ण

मुझसे ही है हर उतिष्ठ

मुझसे ही है हर उतिर्ण

हर कुछ मुझसे...........

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरी तो ठकुरानी है श्री यमुना माँ

मेरी तो महारानी है श्री यमुना माँ

मेरी तो रसरानी है श्री यमुना माँ

मेरी तो मधुरानी है श्री यमुना माँ

मेरी तो आह्लादायिनी है श्री यमुना माँ

मेरी तो भक्तिवर्धनी है श्री यमुना माँ

मेरी तो प्रभुरतिवर्धनी है श्री यमुना माँ

मेरी तो संगीनी है श्री यमुना माँ

मेरी तो जननी है श्री यमुना माँ

मेरी तो पदमिनी है श्री यमुना माँ

मेरी तो दर्शनी है श्री यमुना माँ

मेरी तो भवानी है श्री यमुना माँ

हे यमुना मैया 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "🌷🙏🌷

हे प्रभु! प्राकृतिक परिवर्तन - प्राकृतिक असर - प्राकृतिक रचनाएं हर एक को बदल देती है🌷🙏🌷

पर आप के सानिध्य में - आप के साथ जुडे हुए - आप के सत्य आचरण से स्वीकार्य हुए को न कोई परिवर्तन - असर और प्राकृतता बदल देती है🌷🙏🌷

कितना सरल - निश्चित धर्म मार्ग संस्थापा है आपने 🌷🙏🌷

आप अदभुत हो - अलौकिक हो - अनोखे हो - प्रमाणित हो - प्रमयी हो - प्रणयी हो 🌷🙏🌷

हम अपने नैन से - मन से - तन से - धन से - जीवन से आप से जुडे रहे - शरण रहे तो अवश्य तारणहार हर परिवर्तन - असर में हमें सुरक्षित रखेंगे🌷🙏🌷

तुम्हारी जय जय हो🙏

तुम्हारी जय जय हो🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वल्लल! हे विठ्ठल! हे गोकुलनाथ! हे हरिराय!

पुष्टिमार्ग की धजा फरफराते जन्मजीवन संस्कार सिंचा

हम अबुध जीव विशुद्ध रुप में परिवर्तन दिशा दर्शायी

सांस सांस से पुरुषार्थ सीखाया कोष कोष में तनु नवत्वता

कदम कदम पर अज्ञान संवारा श्री गोवर्धन परिक्रमा जगायी

रज रज छूए कण कण स्पर्शे पुष्टिगोत्र हृदय प्रकटाया

अनंत गुणों से गुण भूषिते समस्त दूरितक्षय नष्टाया

स्मरश्रमजलाणुभि: सकलगात्रजै: संङ्गम: आत्म एकात्मया

रग रग श्री यमुना वात्सल्य स्त्रोत पय: पान करवाया

हे वल्लल! हे विठ्ठल! हे गोकुलनाथ! हे हरिराय! नमन नमन🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कभी तुलसीजी को नमन किया है?

कभी तुलसीजी के सानिध्य में दीप प्रकटाया है?

कभी तुलसीजी का अभिषेक किया है?

कभी तुलसीजी का पूजन किया है?

कभी तुलसी पत्र अभिषेक किया है?

कभी तुलसी चौक में बैठे हो?

कभी तुलसी रस अमृत पीया है?

कभी तुलसी सुगंध सांस भरा है?

नही नही - कभी नही

ओहहह! तो जीवन कैसे जीये हो?

रोग - राग - कुष्ठ - तन मन धन जीवन पाया

कॉरोना काल जन्मजीवन जगाया

ऐसे मतवाले हम जो संस्कार जीवन बुझाया

न खुद को समझा न तुलसी समझा घर घर अंधेरा छाया

जागो जागो हे अज्ञान अंधे!

नैन मन तन धन जीवन तुलसी पधराये 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सत्संग - जो सत्य से जुडा हो

सत्य - जो सिद्धांत से जुडा हो

आत्मा - जो सत्याग्रही हो

अक्षर - जो सत्यार्थी हो

विचार - जो सत्यमन से उठता हो

क्रिया - जो सत्यतन से आचरण हो

वचन - जो सत्यसंयम से विवेकी हो

स्वीकार - जो सत्यनियमन हो

अपनाना - जो सत्यपारायण हो

मान्यता - श्रद्धा - लागणी - अर्धसत्य - असंमजस - अधुरप - स्व अहंकारी ज्ञान और भाव अचूक हमारी योग्यता - सत्यता को नष्ट करता है और हम धृतराष्ट्र हो कर बस जीते रहते है - एक दूसरे को पोषते रहते हो - दंभी दिलासा देते रहते हो।

ऐसा ज्ञान - ऐसा जीवन ऐसा धर्म ऐसा कर्म में डूबते रहना - स्वमन से इसे धन्यता समझे 🙏

ओहहह - कितनी अयोग्यता!

ऐसी गंगा यमुना बहाते बहाते काल - युग और स्व को कहां पहुंचाया?

हे ईश्वर! संमति - सदबुद्धि - संरक्षित प्रदान करते रहना 🙏

" Vibrant Pushti "

हे मित्रों! जिज्ञासा प्रश्न है - अवश्य उत्तर देना 🙏

हम मनुष्य धर्मिष्ठ - धर्म पारायण - धर्म आस्था - धर्म स्वीकार - धर्म सैद्धांतिक - धर्म पिपासु - धर्म आचरणीय - धर्म धारणीय - धर्म सन्यास - धर्म नियमन - धर्म चुस्त - धर्म योगी - धर्म यज्ञयी - धर्म शिस्त है 🙏 जिससे हम परम प्रेमी - भक्त - सेवक - दास और गुरुत्व पाते है🙏

तो भी हमारी चित्त वृत्ति सदा संसार व्यवहारिक में डूबी रहती है। ऐसा क्यूँ?

हम असंमजस और अधुरप कक्षा से जीवन जीते जीते मोक्ष गति मार्ग पर चलते है - यह जिज्ञासा से चिंतन करता रहता हूं की क्या कर सकते है?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नाम लिखने और नाम पुकारे और नाम स्मरणे और नाम रखने और नाम जपने और नाम धरने में

जो सामर्थ्यता है

जो विलक्षणता है

जो विराटता है

जो विद्वता है

जो विस्तृता है

जो विशेषता है

जो विभूषिता है

जो विनम्रता है

जो विरम्यता है

जो त्रिगुणातीतता है

जो व्याकरणता है

जो धर्मता है

जो धैर्यता है

जो वीरता है

जो शिष्टता है

जो अलौकिकता है

जो अखंडता है

जो संस्कारता है

जो सफलता है

जो सार्थकता है

यह हमें पानी है - थामनी है - सिद्धानी है - पुरुषार्थनी है - सत्यानी है🙏

यही ही हमारी मूलत्वता है

हमने चाहे अनेकों जन्म धरें - जीवन धरें - काया धरी पर जब ज्ञान जन्म - जीवन - काया धरी हमें अवश्य सार्थक करना ही है।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" पढना " अर्थात ज्ञान पाना + भाव समझना सैद्धांतिक - वैज्ञानिक और प्राकृत अनुभवों से - शिक्षा से🙏

हमारे आचार्यों पढे

हमारे गुरुदेवों पढे

हमारे ऋषिमुनियों पढे

हमारे पूर्वजों पढे

हमारे मातापिता पढे

हम पढे

हमारे पुत्रपुत्री पढे

यही धारा है - यही संस्कृति है - यही संस्थापन है - यही संस्कार है🙏

" पढना " का अर्थ अनोखा है - अदभुत है - अविनाशी है - सत्यार्थी है - उर्जित है - प्रज्ञावान है - परमार्थी है - धर्मिष्ठ है - निरंकार है🙏

पढने से ही हर एक संस्कृत है

पढने से ही हर एक साक्षर है

पढने से ही हर एक आत्मा है

पढने से ही हर एक ब्रह्म है

प्राकृत जीने के लिए पढना - नही

जगत जीतने के लिए पढना - नही

दुनिया झुकाने के लिए पढना - नही

संसार सागर पार करने के लिए पढना - नही

भौतिक सुखों पाने के लिए पढना - नही

कहीं कहीं कहीं कहे

कहीं कहीं कहीं शास्त्रों लिखे

कहीं कहीं कहीं...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

धुम्मस भरा गगन

न सूरज अपनी छडी पुकारे

न पंखी अपनी उडान भरे

नजर मेरी ऐसी दौडे

दूर से बंसरी नाद सुनाये

मन में एक तस्वीर जागे

श्याम श्याम घनश्याम

मेरा प्रेम प्रेम प्रियतम

ऐसे पुकारे दौडी दौडी जाऊँ

ऐसे गाये तन मन बावरे

एक नजर एक ख्याल एक तस्वीर

श्याम श्याम घनश्याम

मेरा प्रेम प्रेम प्रियतम

सांस में श्याम नैन में श्याम

धडकन में श्याम उमंग में श्याम

पैर में श्याम तीव्रता में श्याम

श्याम श्याम घनश्याम

मेरा प्रेम प्रेम प्रियतम

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे प्रिये!

मेरे प्रभु ने

जब तुम्हें रचा होगा

कहीं बार ख्यालों में लाये होंगे

कहीं बार नैनों में तस्वीर संवारी होगी

ऐसी तो कैसी तु कमलनयनी है

जो सूरज उगते तेरे नैन कंवल पलक उठती है🌷

ऐसे तो कैसी तु अधरोंमृत गुलाब है

जो चंद्र उगते तेरी अधरों अमृत चांदनी बरसती है🌹

ऐसे तो कैसी है तेरा सोना वर्ण रंग है

जो कंचन काया रंग मेरे अंग अंग बिखराते है

ऐसे तो कैसी है तेरी दिल धडकन है

जो मधुर रस क्षण क्षण बरसाती है 💗

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे मेरे जगत मित्र 🌷
जैसे मैं जीता हूं ऐसे तु जीता है
जैसे मेरा जीवन है ऐसा तेरा जीवन है
मैं सांस भरता हूं तु सांस भरता है
मैं कर्म करता हूं तु कर्म करता है
मुझे एक दिन जगत छोडना है तुझे भी एक दिन छोडना है
हाँ! तु कोई स्थली पर रहे मैं कोई स्थली पर रहूं
हर स्थली की मर्यादा में रहते है
हर स्थली की व्यवस्था में रहते है
हर स्थली की व्यवहारता में रहते है
हर स्थली के शिस्त में रहते है
हर स्थली के शासन में रहते है
हर स्थली के धर्म में रहते है
हाँ! मैं अपने आप से तुझे पहचानु तु अपने आप से मुझे पहचाने
चाहे मैं दूर हूं चाहे तु दूर है
हमारा आकाश एक सूरज एक
हमारी धरती एक प्रकृति एक
हमारा जल एक वायु एक
हमारा अन्न भिन्न रंग भिन्न
हमारा धर्म भिन्न मन भिन्न
तो भी तु मुझसे चाहे मैं तुमसे चाहूं
चाह चाह में हम एक मनुष्य
हम ज्ञानी हम प्रेमी हम हर एक साथी
हमसे भगवान खुदा GOD.......
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वल्लभ! पुष्टि भूमी छूए एक सेवक

चंपारण्य से पावन हो एक सेवक

रज रज छू कर पुष्टाग्नि प्रकटा कर

दंडवत प्रणाम तनमनधन शरणम् सेवक

हे वल्लभ! पुष्टि भूमी छूए एक सेवक

हे यमुना! पुष्टि घाट खडा एक सेवक

ठकुरानी घाट से संबंध पाये सेवक

बूंद बूंद छू कर पुष्टि वचन स्वीकार

दूरितक्षय तनु नवत्व पाये सेवक

हे यमुना! पुष्टि घाट खडा एक सेवक

हे गिरिराज! पुष्टि परिक्रमा चले एक सेवक

मुखारविंद चरण स्पर्श दंडवती सेवक

कदम कदम पुष्टि सिद्धांत प्रण कर

स्व दासत्व शरणागत धरे सेवक

हे गिरिराज! पुष्टि परिक्रमा चले एक सेवक

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सायों को लिपट लिपट तेरी राह पर चलता हूं
खुद को भूल कर तेरे ख्यालों में डूबा रहता हूं
हे राधा! तु कहाँ है?
कदम कदम पर तेरा इंतज़ार
नजर नजर पर तेरी तस्वीर
तेरे नाम की धून पुकारे बंसी
तेरे प्रेम की विरहता खोये हस्ती
हे राधा! तु कहाँ है?

गोवर्धन निकुंज भटकली
यमुना तट घुमली
गोकुल गली छानली
वृंदावन पत्ते जांचली
हे राधा! तु कहाँ है?

आसमान के तारों को पूछा
धरती के वृक्षों को पूछा
सागर के बूंद को पूछा
वायु के लहर को पूछा
हे राधा! तु कहाँ है?
राधा🌺 हे राधा!🌺 हे राधा!🌺 हे राधा🌺
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीव -

मानव -

मनुष्य -

भक्त -

भगवदीय -

भागवत -

संत -

ऋषि -

मुनि -

ब्रह्मश्री -

भगवान -

जो मनुष्य जन्म धरे वह यह कक्षा पर पहुंच सकता है 🌷🙏🌷

हम जीते जीते - हमने कहीं चरित्र तरासे - हमारे पास और साथ यही कक्षित जीव का स्पर्श और अनुभव करते ही है

यही संसार - यही लोक - यही जगत - यही ब्रह्मांड - यही धाम में 🌷🙏🌷

जब हाथ पसारे जाते है तब यही संसार - जगत हम छोड कर जाते है - साथ जो पुरुषार्थ ले जाते है - जो अगले लोक धाम के लिए कक्षित रखते है

हम दुर्लभ मानुष्य अति भाग्यशाली 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" शुद्धाद्वैत "
सनातन धर्म का यह परमोच्च शब्द हमें कितनी बड़ी उपलब्धि कर रहा है
🌷🙏🌷
जबसे हम अपने आप को समझते है तब इतना तो अवश्य है और प्राथमिक है
हमें शुद्ध रहना - होना और हो।
शुद्ध की व्याख्या अनोखी और अखंड है
नैन से शुद्ध
मन से शुद्ध
तन से शुद्ध
धन से शुद्ध
जीवन से शुद्ध
🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏
यह शुद्ध ही हमारा संस्कार है
यह शुद्ध ही हमारा धर्म है
यह शुद्ध ही हमारी सेवा है
यह शुद्ध ही हमारी पराकाष्ठा है
शुद्ध है तो बुद्ध है
बुद्ध है तो योग्यता है
योग्यता है तो मनुष्य जीवन है
यह सांस तक सोचें
हम कितने शुद्ध है?
नही नही और नही - हम शुद्ध नही है
जो शुद्ध नही तो मायावी है
जो शुद्ध नही तो पवित्र नही
जो शुद्ध नही तो प्रेम नही
🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पंच महा तत्वों कितने अनमोल है
अगर एक में थोडी सी कमी आई तो हम क्या?
हम मनुष्य से रोगी भोगी और निरुपयोगी होते है
हम चाहे कितने धर्मात्मा हो
हम चाहे कितने सेवक हो
हम चाहे कितने दानी हो
हम चाहे कितने उपकारी हो
हम चाहे कितने साक्षर हो
हम चाहे कितने वैज्ञानिक हो
हम चाहे कितने ज्ञानी हो
हम चाहे कितने धनी हो
हम चाहे कितने सिद्‌ध हो
जो कोई भी एक तत्व में कमी हम अयोगी
हम समझते है - कौन है ऐसा जो कोई तत्वों से कमी मात्रा में न हो!
भक्त
भगवदीय
भागवत
निरपेक्षिय
विशुद्‌धिय
पावित्र्य
विश्वनीय
तनुनवत्व्य
गोपि
गुणातीत
कृपाय
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कभी ऐसा सोचा है

अपनी आसपास कहीं जीव अलग शरीर और रुप में आते है - वह कौन है?

वह हमारी आसपास ही क्यूँ?

जैसे पंखी स्वरुप

जैसे पशु स्वरुप

जैसे किटाणु स्वरुप

जैसे तंतु स्वरुप

जैसे मानव स्वरुप

जैसे पितृ स्वरुप

जैसे देव स्वरुप

जैसे दानव स्वरुप

जैसे पूर्वज स्वरुप

यह गहराई भरा और ज्ञान जीवन जिज्ञासु भरा सत्य शिक्षित अध्ययन है।

हमें अवश्य समझना चाहिए।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे पुरुष! तुम ही उत्तम हो पुरुषोत्तम हो

हे स्त्री! तुम ही दासी हो दासत्व हो

हे पुरुष! तुम ही परम हो परमात्मा हो

हे स्त्री! तुम ही पावन हो पावनी हो

हे पुरुष! तुम ही अर्थ हो पुरुषार्थ हो

हे स्त्री! तुम ही अमृत हो चरणामृत हो

हे पुरुष! तुम धर्म हो धर्मसंस्थापन हो

हे स्त्री! तुम सेवा हो सेवक हो

हे पुरुष! तुम विश्वास हो परमोश्वास हो

हे स्त्री! तुम पवित्र हो पावित्र्य हो

हे पुरुष! तुम श्रेष्ठ हो परमश्रेष्ठ हो

हे स्त्री! तुम सदाचार हो सदाज्ञि हो

सच कहे! यह ही समझना गोलोक है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

राम राम राम

श्री राम राम राम

हरे राम राम राम

जय राम राम राम

सीताराम राम राम

राजाराम राम राम

मन राम राम राम

तन राम राम राम

धन राम राम राम

जीवन राम राम राम

भज राम राम राम

जप राम राम राम

लख राम राम राम

सरल - शुद्ध - पवित्र - विश्वनीय

राम राम राम

कितनी अनोखी और अखंड संस्कार और संस्कृति है

केवल

राम गुण गानें से

अमानवीय - ऋषि हो जाता है

अहल्या - सुहल्या हो जाती है

पशु - देव हो जाता है

शुद्र - भगवदीय हो जाता है

पर्वत - औषध हो जाता है

सागर - मार्ग हो जाता है

अछूत - माँ हो जाती है

हमारी संस्कृति का आध्यात्मिक प्रमयबल

नमन 🙏 वंदन🙏 प्रणाम🙏

हे हिन्दुजन! आपको प्रणाम🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गहराई से चिंतन करे
जन्म धरने के बाद

हमने क्या समर्पित किया?

समझ पाने के बाद

हमने क्या समर्पित किया?

सुख या दु:ख पाने के बाद

हमने क्या समर्पित किया?

जो चाहा वह पाने के बाद

हमने क्या समर्पित किया?

युवान होने के बाद

हमने क्या समर्पित किया?

वृद्ध होने के बाद

हमने क्या समर्पित किया?

शायद सबकुछ पाने के बाद

हमने क्या समर्पित किया?

अवश्य सोचना

जो जो पाने का पुरुषार्थ हमने किया

वह पाने के बाद

हमने क्या समर्पित किया?

शायद हम कहें - सब उन्हीं का है

उन्होंने जैसा जीवन दिया

ऐसा जीवन जीया

तो भी

हमने क्या समर्पित किया?

अरे! सबकुछ उन्हींका है

अब उन्हें सोंप कर

हम चल बसेंगे

तो हमने सबकुछ उन्हें ही समर्पित किया

तो भी

हमने क्या समर्पित किया?

हे प्रभु! आपका जीवन आपको समर्पित किया

तो भी

हमने क्या समर्पित किया?

अवश्य चिंतन करना

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनी अदभुत सनातन धर्म की परंपरा है

जहां हम मन चाहे जीवन की पराकाष्ठा पा सकते है

हम खुद तय करते है गृहस्थ आश्रम - सन्यास्थ आश्रम और जो धर्म मार्ग अपने आपसे मन से - तन से - धन से - कर्म से बांधा बस उन्हीं पर अविचलित चलते रहो - चलते रहो - चलते रहो।

न कोई उपेक्षित - न कोई विपेक्षित

हमने जो चाहा जानते, समझते, पहचानते, स्वीकारते और अपनाते अपना जीवन लक्ष प्राप्त करते रहो।

हमें जीवन मार्ग में कहीं बंधनी - सबंधी -स्नेही - रिश्तेदार या जन जीवन धर मिलते गये - साथ चलते गये - बिछडते गये पर आगे बढते गये - बढते गये।

मान्यता से भरे - अंधश्रद्धा से परे स्व जीवन गुजारते चलो, परिवर्तन करते चलो - स्वीकारते चलो - हरिगुण गाते चलो।

न भेदभाव - न द्वैश - न कलेश - न विष बस वैविध्यता भरे धर्म परायण करते चलो।

जीना है साथ - रहना है साथ साथ - मरना है साथ साथ तो मनचाहे हरिगुण निभ...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चारों ओर धुम्मस

धुंधलापन प्रकृति में

धुंधलापन प्रक्रिया में

धुंधलापन सांसों सांस में

धुंधलापन मन में

धुंधलापन संकल्प में

धुंधलापन सुरक्षित में

धुंधलापन निर्वाह में

धुंधलापन व्यवहार में

धुंधलापन रिश्तों में

धुंधलापन व्यवस्था में

धुंधलापन निति में

धुधलापन नियमन में

धुधलापन स्व जीवन में

धुंधलापन पर लोक में

धुंधलापन पर जगत में

धुंधलापन धर्म में

धुंधलापन मान्यता में

धुंधलापन कर्म में

धुंधलापन रमत में

धुंधलापन संबंध में

सच! हम कैसे मनुष्य? हम न अपना धुंधलापन दूर कर सके और ओरों का धुंधलापन दूर करने अथाग प्रयत्नशील रहे🙏 कितना अनोखा आश्चर्य!

स्व करे वह 'सत्य मेव जयते'

पर करे वह अंधकार

यह धुंधलापन तब ही हटेगा जब खुद का अंधकार मिटाये

जो न मिटाये खुद अंधकार चारों ओर धुंधलापन में डूबता जाये

न खुद को जगाये न सूरज उगाये

न चंद्र जगाये न आकाश जगाये

न जल जगाये न थल जगाय...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमारी आसपास जो है वह हम जानते है?

हमारी अंदर बाहर जो है वह हम जानते है?

हम कैसे रचायें है वह हम जानते है?

हम यह स्थली पर है वह स्थली क्या है हम जानते है?

हम जो वातावरण में है वह वातावरण क्या है हम जानते है?

हम जो जल पीते है वह जल क्या है वह जानते है?

हम जो अन्न आरोगते है वह अन्न क्या है हम जानते है?

हम जो सांस ले रहे है वह सांस क्या है हम जानते है?

हम जो भूमि की रज छूते है वह रज क्या है हम जानते है?

हम जो उर्जा पाते है वह उर्जा के स्त्रोत सूर्य को हम जानते है?

हम जो वनस्पति से औषधि पाते है वह वनस्पति क्या है हम जानते है?

हम जो बंधनों से बंधते है वह बंधन क्या है हम जानते है?

हम जो रिश्तों से जुडते है वह रिश्ता क्या है हम जानते है?

ऐसे कहीं प्राथमिक जिज्ञासा प्रश्नों है जो हमें अवश्य जानना चाहिए🙏

हम शिक्षा अर्थोपार्जन के लिए नही पाते है पर जीवन सार्थक - यथा...

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" श्री कृष्णाय वयं नमः "

अदभुत मेरे प्रभु अदभुत! 🌷🙏🌷

वयं - परोपकार पुण्याय 🙏

हे सनातन संस्कृति! तुम्हें प्रणाम 🙏

मुझे आप आप कर रहे हो इतनी अदभुत लीला

मैं आपका अंश आप ही मुझे आपमें एकात्म कर रहे हो

ऐसा अवसर प्रदान कर रहे हो - आपकी अलौकिक कृपा 🙏

हे प्रभु! आपको शत् शत् प्रणाम🙏

मैं आपका दास! मेरा कितना औचित्य🙏

आपसे ही पाया आपको पाने का मार्ग

आपसे ही मिले आपको मिलने की दिशा

आपसे ही जागे आपका संस्मरण

आपसे ही प्रजवल्ले मेरा आत्मीय दीपक

मैं अपने से जाने स्वयं

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे सदगुरू मेरे मातापिता

मेरे परम पुरुषोत्तम

मेरे परम पूज्य पिता

मेरे परम धात्री

मेरी परम माता

करु तुझे क्षण क्षण

प्रणाम ही प्रणाम

तु ही मेरी सांसें

तु ही मेरे ध्यासे

कभी न बिछडे

तेरी नजर के दरसे

हे मेरे परम पिता

आपसे ही मेरा ब्रहम

आपसे ही मेरा जीवन

कभी न तुटे

हमारा एकात्म

हे मेरी परम धात्री

आपसे है मेरा सिंचन

आपसे है मेरा संस्कार

कभी न छूटे

हमारा धर्म

मेरे आनंद हो तुम

मेरे परमानंद हो तुम

मेरे सर्वानंद हो तुम

मेरा अखंडानंद हो तुम

आपसे भागवत मेरी

आपसे गीता मेरी

आपसे संस्कृति मेरी

आपसे हसती मेरी

सदा आप मुझमें बसो

यही नित्य प्रार्थना मेरी

यही नित्य विनंती मेरी

यही नित्य जिज्ञासा मेरी

प्रणाम प्रणाम प्रणाम

प्रणाम प्रणाम प्रणाम

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सच कहे

डोर तो कहींओ ने अपनी अपनी तैयार करली थी

पर पतंग मेरी इतनी रंगीन थी

की

जिसने अपने रंग रंग से बांधा

जिसने अपने तरंग तरंग से गांठा

जिसने अपने अंग अंग से जोडा

उसके साथ ऐसी उडी ऐसी उडी प्रेम गगन में

न कोई और थाम सका

न कोई और काट सका

न कोई और तोड सका

मैं और मेरे प्रियतम

लहराते रहे - झुमते रहे - बिखराते रहे

प्रेम की लडी - प्रेम की रंगी - प्रेम की भिगी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का व्यक्तित्व

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का प्रतिनिधि

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का मूलत्व

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय की धरोहर

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का गौरव

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय की गाथा

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का परिधान

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का प्राण

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का संस्कार

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का कर्म

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का प्रतीक

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का धर्म

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का वर्ण

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का सन्मान

" कृष्ण - कान्हा " हमारे हर भारतीय का वंदन

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गजब है संसार की रचनाओं को

तर्क वितर्क क्षण क्षण

गजब है समय संस्कृति की संरचनाओं को

समय समय समयानुसार

गजब है संस्कार नियमन रचनाओं को

मन मन नियमन

गजब है अक्षर या शब्दों के व्याकराणार्थ का समझने को

काल काल विविधार्थ

गजब है स्वभाव पहचानने को

स्व स्व विवादिता

गजब है सत्य जानने का

कर्म कर्म कर्मकांड

गजब है धर्म अपनाने का

मान्य मान्य ऋढिवाद

गजब है शिक्षा प्रदानने का

स्वर स्वर व्यवहार

पंच स्थान कलयुग बसे

पंच तत्वों कलयुग सिंचे

पंच महाभूतों विलिन क्षण क्षण बसे

यह नकारात्मकता नही है

यह आध्यात्मिक घूटनता है

जो हर हर हरि को त्यागे

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे लुटेरे!

तुने जो जो लुटा

जिससे मैंने बिंदिया सजाई

तुने जो जो लुटा

जिससे मैंने चुडिया खनखनाई

तुने जो जो लुटा

जिससे मैंने पायल बंधाई

तुने जो जो लुटा

जिससे मैंने आंचल गंठाई

तुने जो जो लुटा

जिससे मैंने प्रीत जगाई

तुने जो जो लुटा

जिससे मैं तेरे रंग रंगाई

तुने जो जो लुटा

जिससे मैंने तेरे चरण बसाई

हे प्रिये! तु मेरा

हाँ! तु मेरा मैं तेरी बिहाई

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीव ब्रह्म का अंश

अर्थात ब्रह्म अंशी

ब्रह्म कौन?

गहराई से सोचें - ब्रह्म कौन?

श्री शंकराचार्यजी कहते है - "अहं ब्रह्मास्मि"

कितना गूढ रहस्यमय सिद्धांत श्री शंकराचार्यजी ने स्व अनुभव और अनुभूति से सिद्ध कर दिया है 🌷🙏🌷

" आनंदमात्रकरपादमुखोदरादि "

अदभुत! हिन्दु संस्कृति के हर आचार्यों ने स्वीकारा 🌷🙏🌷

भक्तों - ऋषिमुनियों - संतों ने यह अनुभूति स्व पहचान से ऐसी पाई की वह स्व परब्रह्म में विलिन हो गये 🌷🙏🌷

व्रजभूमि के कहीं संत आज भी यह सिद्धांत से परमानंद पाते है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे यमुनाजी 🌷🙏🌷

हे वल्लभाचार्यजी 🌷🙏🌷

हे गिरिराजजी🌷🙏🌷

हे श्रीनाथजी 🌷🙏🌷

जीवन के वर्ष वर्ष का पडावों में संकल्प - विकल्पों और अनेक कर्मयोग के पथ पर चलते चलते अनेकों संस्कार - सिद्धांत - पद्धति और शिक्षा पाई🌷🙏🌷

कितनें जीव मिलें - कितनें आत्माएं मिली - कितनें गुरुदेवों मिलें - कितने ऋणानुबंध सगा स्नेहीजनों मिलें - कितनें मित्रों मिलें - कितनें तत्वों मिलें, हर एक को मेरा प्रणाम🌷🙏🌷

करुणा - क्षमा - दया और स्मित जो मैंने आप सभी से सीखा वही बार बार दोहराऊं - वही बार बार अपनाऊं यही ही श्री प्रभु से याचना - विनंती - प्रार्थना🌷🙏🌷

आप का सदा ऋणी 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जिज्ञासा प्रश्न

समुद्र मंथन देवताओं और असुरों के बिच ही क्यूँ हुआ?

दैवी अनुष्ठान या यज्ञ में असुर क्यूँ?

असुरों इतने निम्न है तो देवताओं से समकक्ष क्यूँ?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

फूल कभी न फेंके

फूल कभी न बिगडे

फूल कभी न बिखरें

फूल कभी न बेचें

फूल कभी न सोंपे

फूल कभी न छोडें

फूल कभी न मोडें

फूल कभी न मांगे

फूल कभी न लुटे

फूल कभी न नंदे

फूल कभी न मारें

फूल कभी न त्यागे

फूल कभी न रोंदे

फूल कभी न झाडे

यह एक ऐसा प्रतीक है

जो सदा प्रेम बरसायें

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि - दशम्

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

"Vibrant Pushti"

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "